कितना पढ़ा है मैकॉले को...

गिरीश शर्मा

मैकॉले की शिक्षा व्यवस्था को लेकर मैकॉले की बहुत आलोचना की जाती रही है। यहां तक कि महात्मा गांधी ने भी उसे देश के अनुकूल नहीं माना था और उन्होंने उसके विकल्प के तौर पर बुनियादी तालीम की योजना प्रस्तुत की थी। लेकिन दुर्भाग्य से वह भी विभिन्न कारणों के चलते देश में नहीं अपनाई जा सकी। वस्तुतः मैकॉले के बारे में बहुत ही कम लोगों को जानकारी है। ऐसे में भारतीय शिक्षा व्यवस्था की कमियों का सारा दोष मैकॉले पर ही मढ़ दिया जाता है। यद्यपि आज भी देश और दुनिया में मैकॉले की शिक्षा व्यवस्था ही प्रचलित है। पाठकों के लिए मैकॉले के विचार के दूसरे पक्ष को यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

हमने मैकॉले के बारे में कई गलत धारणाएं बना रखी हैं। इसके पीछे मूल कारण यह है कि हमने कभी मैकॉले के ऑरिजनल टेक्स्ट को नहीं पढ़ा है। जहां तक मैकॉले को पढ़ने का सवाल है, हमें बी. एड. और एम.एड. पाठ्यक्रम के दौरान उसे पढ़ने का मौका मिलता है। लेकिन यहां भी जितना पढ़ाया जाता है और जैसे पढ़ाया जाता है वह मैकॉले को समझने के लिए पर्याप्त नहीं है। यहां केवल मैकॉले के 'मिनिट्स' पढ़ाए जाते हैं वह भी अधूरे। यदि इन पाठ्यक्रमों को पढ़ाने वाले संस्थानों के पुस्तकालयों में हम मैकॉले के बारे में सामग्री तलाशेंगे तो वह हमें मात्र दो या ढाई पेज से ज्यादा नहीं मिलती। अधिकांश पुस्तकों में लगभग एक जैसी सामग्री है, उन्नीस–बीस का फर्क है।

मैकॉले के मिनिट्स क्यों व किन परिस्थितियों में लिखे गए, मिनिट्स के आगे–पीछे क्या है और उसमें किन–किन मुद्दों पर बात की गई व उन बातों का क्या परिप्रेक्ष्य था? उस वक्त का क्या संदर्भ था? इसके बारे में विद्यार्थियों को कोई सामग्री उपलब्ध नहीं कराई जाती हैं और न ही जानकारी दी जाती है ताकि वे स्वयं सामग्री देखें और कक्षाओं में भी इस पर कोई सार्थक चर्चा और विश्लेषण ही प्राध्यापकों द्वारा हो पाता है। इन तमाम बातों से हमारे सामने मैकॉले का केवल एक पक्ष ही सामने आ पाता है और हम उसके लिए गलत धारणाएं बना लेते हैं। इन अधूरे तथ्यों के साथ मैकॉले के बारे में विद्यार्थियों की समझ कैसी बनती होगी इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। यदि हमें यह लगता है कि भारतीय शिक्षा में मैकॉले का महत्त्पूर्ण स्थान है जो कि सच भी है तो इस बारे में हमारी कक्षाओं में सार्थक चर्चा होनी चाहिए। हमें उसके ऑरिजनल टेक्स्ट को जरूर पढ़ना चाहिए।

मैकॉले के ऑरिजनल मिनिट्स, इस पर हुए शोध और इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री को पढ़ने के बाद मैकॉले के बारे में जो समझ बनी है उसको यहां लिखने का प्रयास किया है। यहां हम मैकॉले की कोई बढ़ाई या तारीफ नहीं कर रहे हैं। हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, यह सही हो सकता है कि उसने इंग्लैड की भलाई के लिए योजना बनाई हो लेकिन हमें इस बात से भी इनकार नहीं करना चाहिए कि इससे भारतीयों को कितना फायदा पहुंचा है। हम आज तक उसकी कही गई कईं अच्छी बातों को हमारी भलाई के लिए इस्तेमाल करते जा रहे हैं और इसका श्रेय मैकॉले को

देने के बजाय हम उसकी कुछ बातों को पकड़ कर बैठ जाते हैं और उसकी बुराई करने लगते हैं।

वैसे तो भारतीय राजनीति में मैकॉले का बहुत बड़ा सहयोग रहा था लेकिन उसके दो योगदान हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण थे। पहला यह कि वह भारतीय शिक्षण संस्थाओं में अंग्रेजी लाना चाहता था। इसके साथ ही वह विषय सूची और मैथोडोलॉजी में भी परिवर्तन करना चाहता था। दूसरा उसने भारतीय पेनल कोड के विकास में योगदान दिया।

इसके पीछे मैकॉले की दूरदृष्टि यह थी कि यदि भारतीय पढ़ लिख जाएंगे तो उन्हें यहां के शासकों की जरूरत नहीं होगी वे स्वयं अपने आप पर शासन कर सकेंगे। वह भारतीयों को शिक्षा देकर उन्हें स्वायत्त बना देना चाहता था।

इसके पीछे के सच को जानने के लिए यदि मैकॉले को पढ़ें कि मैकॉले किन परिस्थितियों में भारत आया था, उसके आने का उद्‌देश्य क्या था, उस समय भारत की स्थिति क्या थी तो हमें पता चलेगा कि उसने जो पक्ष रखा था वह हमारे लिए कितना जरूरी था। उस समय किस तरह हमारा देश पिछड़ेपन व अंधविश्वासों से घिरा था। भारत की ऐसी स्थिति देख कर ही मैकॉले ने यहां के लोगों को शिक्षित करने की बात कही थी।

मैकॉले ने भारत आकर यहां की परिस्थितियों का विवेचन किया तो उसमें यहां की तत्कालीन राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक स्थिति का वर्णन मिलता है। मैकॉले के शब्दों में ''यहां का राजनैतिक परिदृश्य अनेकों बुराइयों से ग्रस्त तो था ही, आक्रमणकारियों के बर्बर अपराधों से भी ग्रसित था। समाज में एक प्रकार की अराजकता का वातावरण था तथा षड़यंत्रों और आंतरिक झगड़ों की बाहुल्यता थी। जनता को न केवल बाहरी लुटेरों से खतरा था बल्कि प्रशासन भी उनको लूटता था। समाज में नियम कानून लगभग शून्य स्थिति में थे। नगरों में अराजकता तथा उपजाऊ ग्रामीण क्षेत्रों में अकाल की स्थिति थी। ''इन सब स्थितियों को देख कर उसने कहा ''ऐसा लगता है कि आगामी कुछ ही वर्षों में यहां की संपूर्ण विरासत एवं धरोहर धाराशायी हो जाएगी।'' ऐसी परिस्थितियों के बीच कंपनी ने भारत में अपना कार्य शुरू किया था जिसका एक महत्त्वपूर्ण उद्‌देश्य उन्हीं के शब्दों में 'रिकन्स्ट्रक्ट ऑफ अ डिकंपोस्ड सोसायटी' जो कि एक कठिन प्रक्रिया थी।

यदि अंग्रेजों के मन में उस समय कोई कपट था तो आज यही काम इंटरनेट कर रहा तो हम उसे रोकने का प्रयास क्यों नहीं करते?

मैकॉले को पढ़ने से हमें यह भी पता चलेगा कि वह असाधारण प्रतिभा का धनी था। हालांकि उसे खेल तथा इस तरह की अन्य गतिविधियों में ज्यादा रुचि नहीं थी लेकिन वह पढ़ता खूब था। वह भारत में बहुत मजबूत और स्वतंत्र योजना लेकर आया था। मैकॉले भारतीयों की क्षमता, कौशल एवं शक्ति से भी बहुत प्रभावित एवं आकर्षित हुआ था। उसने भारतीयों पर अंग्रेजी को कभी नहीं थोपा था बल्कि उसने वास्तविक स्थितियों को देखा था व उसी के आधार पर अपने मिनिट्स में इस बात को इंगित किया था कि भारतीय खुद अंग्रेजी बोलना व पढ़ना चाहते थे। भारतीय खुद अंग्रेजी सीखने के लिए पैसा खर्च कर रहे थे, उन्होंने खुद यह आवश्यकता जाहिर की थी। उस समय जो भी लोग संस्कृत में शिक्षा प्राप्त करते थे उनके लिए रोजगार के कोई अवसर नहीं थे।

उसने यह तर्क दिया कि भारतीयों में अंग्रेजी समझने व सीखने की असाधारण क्षमता है, और वे इस भाषा को जल्दी सीख लेंगे। उसने यह भी कहा कि बहुत से भारतीय ऐसे भी मिल जाएंगे जिनका अंग्रेजी में उच्चारण इतना शुद्ध है जितना कि अंग्रेजों का भी नहीं। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए उसने यह साबित करने का प्रयास किया था कि इंग्लैंड को भारत में अंग्रेजी लानी चाहिए एवं संस्कृत को कम करना चाहिए।

अन्य अंग्रेजों को छोड़ दें और मैकॉले के बारे में बात

करें तो उसकी भारत के प्रति आशाएं बहुत महान थीं। दादाभाई नौरोजी ने भी मैकॉले की प्रशंसा की थी। इनकी केवल एक ही पीड़ा थी कि अन्य अंग्रेज मैकॉले की कही गई बातों को नहीं मानते थे। इसीलिए नौरोजी ने लिखा कि ''मैकॉले द्वारा कही गई जितनी भी बातों को अच्छी तरह से अपनाया जाए तो अगले 40 साल बाद यह न केवल अंग्रेजी शासकों के लिए बल्कि भारत के लिए भी वरदान साबित होगी।''

मैकॉले भारतीयों की स्वतंत्रता के बारे मे भी सोचता था। उसने स्पष्ट किया कि एक अच्छी सरकार भारत देश के लिए बनाना उपयुक्त होगा जिससे हम यहां पर अच्छी संस्थाओं की स्थापना के साथ शांति की भी स्थापना कर सकें। यहां के समाज को स्वतंत्रता का माहौल उपलब्ध हो सके। यहां के जनमानस पर धीरे–धीरे यूरोपीय दर्शन, नैतिक मूल्यों और संस्कृतियों जिनका वे शुरू में विरोध करते थे, सकारात्मक प्रभाव दिखाई देने लगा तथा जनमानस सरकार और सामाजिक दायित्वों के प्रति जागरूक होने लगा। मैकॉले ने आर्थिक, सामाजिक और प्रशासनिक क्षेत्रों में प्रशासन द्वारा उठाए गए कदमों का जनमानस पर सकारात्मक प्रभाव का भी उल्लेख किया। यद्यपि उन्होंने स्वीकार किया कि अभी भी इस दिशा में बहुत कुछ करना बाकी है।

वह भारतीयों को बहुत ही इज्जत की दृष्टि से देखता था जबकि हम खुद अपनों के साथ ऐसा नहीं करते हैं। उसने अपने अंग्रेज साथियों को यह तर्क दिया था कि यदि भारतीय पढ़–लिख जाएंगे तो हमारे यूरोपीय शैक्षिक संस्थानों को यहां लाना आसान होगा। यह हमारे इतिहास के लिए भी बहुत गर्व की बात होगी। हम आजादी के इतने वर्षों बाद आज विदेशी विश्वविद्यालयों को यहां लाने की बात कर रहे हैं। यह बात सही है कि इससे विदेशी विश्वविद्यालयों को फायदा होगा लेकिन इससे हमें क्या फायदा होगा इस दृष्टिकोण को भी सामने रखना चाहिए।

मैकॉले की भारत के बारें में इतनी अच्छी सोच वाली पॉलिसी कहीं भारत में नहीं आ जाए, यह अंग्रेज भी नहीं चाहते थे और इस डर से अंग्रेज शासक 1830 में ही भारत को आजाद कर देना चाहते थे।

जहां तक अंग्रेजी का सवाल है और अंग्रेजी को लेकर हम मैकॉले को कोसते हैं उसकी बुराई करते हैं और अंग्रेजी को बाबू बनाने वाली शिक्षा कहते हैं। लेकिन सच तो यह है कि भारत में अंग्रेजी को लाने वाला मैकॉले ही एक अकेला नहीं था। मैकॉले से पहले भी यह प्रयास हो चुके थे। कईं लोग जिनमें जय नारायण, राजा बद्रीनाथ राय समेत अन्य के नाम भी शामिल हैं, ने हमारे देश में मैकॉले के आने से पूर्व अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार के लिए प्रयास किए थे। 1823 में राजाराम मोहन राय ने अंग्रेजी शिक्षा अनुदेशन को बढ़ाने का प्रयास किया था। इस समय एच.एच. विल्सन के नेतृत्व में एक कमेटी ने एक संस्कृत कॉलेज खोला था। परंतु राममोहन राय ने इस कॉलेज के स्थान पर यूरोपीयन भाषा पर आधारित कॉलेज खुलने की मंशा जाहिर की थी। उन्होंने संस्कृत में शिक्षा देने पर भी प्रश्न उठाते हुए कहा था कि 1813 के चार्टर में कंपनी ने जितने रुपए भारतीय शिक्षा पर खर्च करने की बात कहीं, वह यूरोपीय शिक्षा व्यवस्था पर खर्च होने चाहिए ताकि भारतीय गणित, प्राकृतिक दर्शनशास्त्र, रसायनशास्त्र एवं अन्य उपयोगी विज्ञान को पढ़ सकें।

राजाराम मोहन राय ने तो यह भी कहा था कि अंग्रेज शरणार्थियों को भारत में आना मुफ्त कर देना चाहिए ताकि वे भारतीयों के साथ घुलमिल सकें और यहां के लोगों को अंग्रेजी भाषा के विकास में मदद कर सकें। वे यहां अंग्रेजी, कला और विज्ञान लेकर आएंगे जिससे भारतीयों का ज्ञान बढ़ेगा। (एलमर एच. कूट्स, ''द बेकग्राउंड ऑफ मैकॉले मिनिट्स'', द अमेरिकन हिस्टोरियल रिव्यू, वो. 58, न. 4 जुलाई, 1953 पे. 828)

ऐसा जापान में भी हुआ था जब जापान के राजाओं ने जापानियों को नवीन विज्ञान और साहित्य का ज्ञान कराने के उद्देश्य से अमेरिका से लोगों को जापान बुलाया था। बैनेटिक ने भी पार्सियन के स्थान पर अंग्रेजी को कार्यालयी भाषा बना दिया था। इसने बहुत सी सामाजिक प्रथाओं पर भी रोक लगाई थी।

हालांकि अंग्रेज भारत में अंग्रेजी शिक्षा इसलिए लाना चाहते थे क्योंकि अंग्रेजी शासकों को भाषांतर करने में बहुत पैसा लग रहा था। ऐसे में उन्हें भारत में अंग्रेजी शिक्षा लागू करना ज्यादा सस्ता लग रहा था क्योंकि इससे समय और पैसा दोनों की बचत हो सकती थी।

आज की परिस्थितियों में देखें तो भी हमें महसूस होगा कि अंग्रेजी की कितनी अहमियत है। सभी अंग्रेजी सीखना चाहते हैं। और क्यों न सीखें? अंग्रेजी सीखने से ज्ञान के विभिन्न स्रोतों तक पहुंचने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। रोजगार की बात करें तो अंग्रेजी जानने वालों को ज्यादा प्राथमिकता मिलती है। दूसरी ओर हिंदी की बजाए धड़ल्ले से अंग्रेजी माध्यम स्कूल खुलते जा रहे हैं। क्योंकि हम अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में ही प्रवेश दिलाना चाहते हैं। आज शायद ही कोई अभिभावक होगा जो अपने बच्चों को हिन्दी माध्यम के स्कूल में प्रवेश दिलाना चाहता है। गांवों में जिन अभिभावकों के पास थोड़ा सा भी पैसा है, वे भी अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में पढ़ाना चाहते हैं। गांव में सरकारी स्कूल में पढ़ाने के बजाए, अपने बच्चों को दो–तीन किलोमीटर दूर पैदल अंग्रेजी स्कूल में पढ़ने भेजने का जोखिम तक उठाते हैं। यदि हम स्वयं भी इस बारे में सोचें तो हममें से अधिकांश यही चाहते हैं कि हमारा बच्चा किसी अच्छे अंग्रेजी माध्यम स्कूल में पढ़े।

वास्तव में देखा जाए तो मुख्य मुद्दा प्राच्यवादियों एवं पाश्चात्यवादियों के बीच था जिसका मैकॉले मिनिट्स के दौरान हल निकाला गया था कि अधिकांश राशि अंग्रेजी साहित्य के विकास पर खर्च की जाएगी लेकिन क्योंकि प्राच्यवादियों को भी खुश रखना था। अतः कुछ राशि को इस पर भी खर्च करने के लिए रखा गया। जबकि वास्तव में होना यह चाहिए था कि इस राशि को नवीन ज्ञान–विज्ञान पर खर्च करना चाहिए था। आज की परिस्थितियों में देखें तो हमें अपनी प्राथमिकताएं तय करनी होंगी। आज भी हम ऐसे दोराहे पर खड़े हैं जहां यह निर्णय नहीं कर पा रहे हैं कि शिक्षा का माध्यम क्या हो। एक तरफ हम स्थानीय तथा हिंदी भाषा में शिक्षा देने की बात करते हैं वहीं दूसरी तरफ यह भी लालच देते हैं कि विद्यालयों मे अंग्रेजी बोलने पर 20 अंक मिलेंगे।

हम मैकॉले की बुराई करते हैं। यह दोष हमारा नहीं हमारी शिक्षा व्यवस्था का है। क्योंकि मैकॉले के बारे में हमारा ज्ञान अधूरा है। और आज भी उस समय के राजा–महाराजाओं तथा जमींदारों की तरह ऐसा वर्ग है जो यह चाहता है कि लोग शिक्षित न हों और हम उन पर शासन कर सकें।

मैकॉले ने अपने मिनिट्स में कईं ऐसे पक्ष भी रखे जिससे लगता है कि वह भारतीयों के पक्ष में बोल रहा था जैसे– भारत से पैसा कमाने के उद्देश्य की बजाए यदि एक विकास करने वाली व्यवस्था के रूप में कार्य किया जाए तो भारतीयों को भ्रष्टाचार एवं निरंकुशता से छुटकारा मिल सकता है। मैकॉले भ्रष्टाचार से ऊपर उठा कर भारत को एक प्रभावी देश के रूप में जगह दिलाने का पक्षधर था। मैकॉले ने कहा था कि मैं उस सरकार को जनहित में देख रहा हूं जो नैतिकता उत्पन्न कर राजनैतिक और धार्मिक अत्याचार से मुक्त भारत की कल्पना रखती है। मैकॉले ने अपनी सरकार का विरोध करते हुए कहा था कि यहां की कराधान प्रणाली में भी हस्तक्षेप की आवश्यकता है। उसने प्रशासन और व्यवस्था को ठीक से चलाने के लिए सिविल सेवा के द्वारा चार उम्मीदवारों को नामित किया जाने का प्रस्ताव रखा था। मैकॉले ने भारत के कानून में सुधार के उद्देश्य से गठित आयोग का सम्मान किया था क्योंकि भारत में उस समय कानून का कोई कोड नहीं था।

यह सही है कि आज हम बहुत आगे बढ़ गए हैं लेकिन हमें यह सोचना होगा कि हमारे आत्मनिर्भरता की इस मशाल को किसने जलाया। बेशक इसमें हमारे लोगों का हाथ था लेकिन इसमें बाहर के लोग भी शामिल थे।

गिरीश शर्मा : विद्या भवन गो.से. शिक्षक महाविद्यालय में प्राध्यापक तथा शिक्षा की बुनियाद पत्रिका की संपादन टीम के सदस्य।